



Hargharpanditji

॥ रविवार व्रत कथा ॥

॥ ॐ सूर्याय नमः ॥

FULL DISCLAIMER

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"

॥ रविवार व्रत कथा ॥

प्राचीन समय की बात है। एक नगर में एक वृद्धा रहती थी। वह भगवान सूर्य देव की बहुत बड़ी भक्त थी। वह प्रत्येक रविवार को प्रातःकाल उठकर स्नान करती, अपने घर को साफ करती और सूर्य देव की पूजा करती थी। इसके बाद वह सूर्य देव को जल अर्पित करके रविवार का व्रत रखती थी।

वृद्धा के घर में धन-संपत्ति की कमी थी, लेकिन वह हमेशा संतुष्ट रहती थी। उसके मन में सूर्य देव के प्रति अटूट श्रद्धा थी। वह प्रत्येक रविवार को विधिपूर्वक व्रत करती और सूर्य देव से अपने परिवार की सुख-शांति की प्रार्थना करती थी।

वृद्धा के घर में एक गाय भी थी। वह गाय को बहुत प्रेम से रखती थी। गाय प्रतिदिन आँगन में गोबर करती थी। वृद्धा उस गोबर को घर के एक स्थान पर रख देती थी और रविवार के दिन उसी से आँगन को लीपकर सूर्य देव की पूजा करती थी।

उसी नगर में एक दूसरी स्त्री रहती थी। वह वृद्धा से ईर्ष्या करती थी। उसने देखा कि वृद्धा का घर हमेशा स्वच्छ रहता है और वह नियमित रूप से सूर्य देव की पूजा करती है। उसके मन में वृद्धा की परीक्षा लेने का विचार आया।

एक दिन उसने वृद्धा की गाय का गोबर अपने घर में ले जाकर रख लिया। रविवार को वृद्धा को घर लीपने के लिए गोबर नहीं मिला। फिर भी उसने सूर्य देव की पूजा में कोई कमी नहीं आने दी। उसने श्रद्धापूर्वक सूर्य देव को जल अर्पित किया और प्रार्थना की—

“हे सूर्य देव! मेरे पास धन-संपत्ति नहीं है, लेकिन आपके प्रति मेरी श्रद्धा सच्ची है। मेरी पूजा स्वीकार करें और मेरे परिवार पर अपनी कृपा बनाए रखें।”

वृद्धा की सच्ची भक्ति देखकर सूर्य देव प्रसन्न हुए। उन्होंने उसकी गाय को विशेष आशीर्वाद दिया। कहा जाता है कि उस दिन से गाय के गोबर में भी समृद्धि का वास होने लगा और वृद्धा के घर में सुख-समृद्धि बढ़ने लगी। जब उस ईर्ष्यालु स्त्री को यह बात पता चली तो वह बहुत आश्चर्यचकित हुई। उसने वृद्धा से इसका कारण पूछा। वृद्धा ने कहा—

“यह सब सूर्य देव की कृपा है। जो व्यक्ति श्रद्धा और नियमपूर्वक रविवार का व्रत करता है, सूर्य देव उसके जीवन में प्रकाश और सकारात्मकता प्रदान करते हैं।”

यह सुनकर वह स्त्री भी सूर्य देव की भक्त बन गई। उसने अपने अहंकार और ईर्ष्या का त्याग किया तथा प्रत्येक रविवार को श्रद्धापूर्वक सूर्य देव की पूजा और व्रत करना शुरू कर दिया।

सूर्य देव दोनों पर प्रसन्न हुए और उन्हें सुख, शांति तथा समृद्धि का आशीर्वाद दिया।

रविवार व्रत का फल

जो भक्त श्रद्धा और विश्वास से रविवार का व्रत करता है तथा प्रातःकाल सूर्य देव को जल अर्पित करता है, उसके जीवन में आरोग्य, आत्मबल, यश, सम्मान, सुख-समृद्धि और सकारात्मक ऊर्जा की प्राप्ति की कामना की जाती है।